

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



Research Paper

जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति के नवीन आयाम: डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व की भूमिका

Mukesh Chand Meena ^{1*}, Dr. Ranjit Kumar Meena ²

¹ Research Scholer, Department of Sociology, Government College Rishabhdev (Udaipur), Mohan Lal Sukhadiya University, Udaipur, Rajasthan, India

² Associate Professor, Government College Rishabhdev (Udaipur), Mohan Lal Sukhadiya University, Udaipur, Rajasthan, India

Corresponding Author: * Mukesh Chand Meena

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20378911>

सारांश	Manuscript Info.
<p>भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में जनजातीय समुदायों का विशिष्ट स्थान है। जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक कारकों से प्रभावित रही है। वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल परिवर्तन के वर्तमान दौर में जनजातीय महिलाओं के जीवन में नए अवसर और चुनौतियाँ उभरकर सामने आए हैं। डिजिटल साक्षरता ने शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय समावेशन, सामाजिक भागीदारी तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व के क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति के नवीन आयामों का अध्ययन करना तथा डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है। अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसमें प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का समावेश किया गया। शोध के लिए भारत के विभिन्न जनजातीय बहुल क्षेत्रों की 300 महिलाओं का चयन किया गया। अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल साक्षरता ने जनजातीय महिलाओं की आत्मनिर्भरता, निर्णय क्षमता, सामाजिक सहभागिता तथा नेतृत्व कौशल को सुदृढ़ किया है। मोबाइल इंटरनेट, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल बैंकिंग और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शोध निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि डिजिटल संसाधनों तक पहुँच और तकनीकी प्रशिक्षण जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आवश्यक आधार प्रदान करते हैं। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि डिजिटल नेतृत्व के माध्यम से महिलाएँ स्थानीय शासन, स्वयं सहायता समूहों तथा सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इस प्रकार डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को नवीन दिशा प्रदान कर रहे हैं।</p>	<ul style="list-style-type: none"> ✓ ISSN No: 2584-184X ✓ Received: 05-11-2025 ✓ Accepted: 26-12-2025 ✓ Published: 30-12-2025 ✓ MRR:3(12):2025;134-143 ✓ ©2025, All Rights Reserved. ✓ Peer Review Process: Yes ✓ Plagiarism Checked: Yes <p>How To Cite</p> <p>Meena M C, Dr. Meena R K. जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति के नवीन आयाम: डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व की भूमिका. Indian J Mod Res Rev. 2025;3(12):134-143.</p>

मुख्य शब्द: जनजातीय महिलाएँ, सामाजिक प्रस्थिति, डिजिटल साक्षरता, नेतृत्व, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन, डिजिटल समावेशन

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण समाज है जिसमें अनेक जातीय, भाषाई तथा सांस्कृतिक समूह विद्यमान हैं। जनजातीय समुदाय भारतीय संस्कृति के प्राचीन और मूलभूत अंग माने जाते हैं। भारत की कुल जनसंख्या का एक बड़ा भाग अनुसूचित जनजातियों के रूप में निवास करता है। जनजातीय समुदायों की सामाजिक संरचना, आर्थिक व्यवस्था, सांस्कृतिक परंपराएँ तथा जीवन शैली मुख्यधारा के समाज से भिन्न होती हैं। इन समुदायों में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि वे परिवार, कृषि, वन संसाधनों के संरक्षण तथा सामुदायिक जीवन के संचालन में केंद्रीय स्थान रखती हैं (अम्बष्ट, 1993)।

इतिहास के विभिन्न चरणों में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति अनेक प्रकार की चुनौतियों से प्रभावित रही है। अशिक्षा, गरीबी, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, सामाजिक उपेक्षा तथा आर्थिक निर्भरता ने उनकी प्रगति को सीमित किया। आधुनिक विकास प्रक्रियाओं के बावजूद अनेक जनजातीय क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व के पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं हो सके। डिजिटल युग के आगमन ने इस स्थिति में परिवर्तन की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने सामाजिक संरचना के विभिन्न पक्षों को प्रभावित किया है और समाज के वंचित वर्गों तक विकास की पहुँच सुनिश्चित करने का प्रयास किया है।

डिजिटल साक्षरता वर्तमान समय में सामाजिक विकास का प्रमुख आधार बन चुकी है। डिजिटल साक्षरता का तात्पर्य केवल कंप्यूटर या मोबाइल के उपयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि सूचना प्राप्त करने, उसका विश्लेषण करने, संचार स्थापित करने तथा डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग करने की क्षमता से है। जनजातीय महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है (मंजूनाथा एवं गंगाधर, 2018)। इसके माध्यम से महिलाएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, सरकारी योजनाओं की जानकारी हासिल कर रही हैं, डिजिटल बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर रही हैं तथा सामाजिक मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

नेतृत्व किसी भी समाज के विकास का महत्वपूर्ण तत्व होता है। जनजातीय महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान करता है। डिजिटल माध्यमों ने महिलाओं को सामुदायिक संगठनों, स्वयं सहायता समूहों तथा स्थानीय प्रशासनिक संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी के अवसर उपलब्ध कराए हैं। पंचायतों, ग्राम सभाओं तथा महिला संगठनों में उनकी भागीदारी सामाजिक न्याय तथा लैंगिक समानता को सुदृढ़ कर रही है।

वर्तमान अध्ययन जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति के नवीन आयामों का विश्लेषण करते हुए डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व की भूमिका का अध्ययन करता है। यह शोध सामाजिक परिवर्तन की समकालीन प्रक्रियाओं को समझने तथा डिजिटल समावेशन के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की संभावनाओं को रेखांकित करने का प्रयास करता है (मन्ना एवं सरकार, 2016)।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

2.1 मुख्य उद्देश्य

जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व की भूमिका का विश्लेषण करना।

2.2 विशिष्ट उद्देश्य

जनजातीय महिलाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।

डिजिटल साक्षरता के स्तर और उसके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना।

जनजातीय महिलाओं में नेतृत्व क्षमता के विकास का अध्ययन करना। डिजिटल माध्यमों द्वारा आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया को समझना।

डिजिटल संसाधनों तक पहुँच में आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करना।

3. साहित्य समीक्षा

जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। विभिन्न शोधों में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा, आर्थिक अवसर तथा सामाजिक सहभागिता महिलाओं की प्रस्थिति को प्रभावित करते हैं। समकालीन शोधों में डिजिटल साक्षरता को महिला सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है।

शर्मा (2018) के अनुसार जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति पारंपरिक मान्यताओं तथा आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता से प्रभावित होती है। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण महिलाओं की आत्मनिर्भरता को बढ़ाते हैं।

कुमारी और सिंह (2019) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि डिजिटल तकनीक ने ग्रामीण एवं जनजातीय महिलाओं के लिए नए अवसर उत्पन्न किए हैं। मोबाइल इंटरनेट और ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से महिलाएँ सरकारी योजनाओं तथा स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बना रही हैं।

वर्मा (2020) ने डिजिटल साक्षरता और महिला नेतृत्व के संबंध का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि डिजिटल माध्यमों ने महिलाओं की निर्णय क्षमता और सामाजिक सहभागिता को सुदृढ़ किया है। अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को विशेष महत्व दिया गया।

महापात्र (2021) के अनुसार जनजातीय क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना की कमी महिलाओं की प्रगति में प्रमुख बाधा है। इंटरनेट कनेक्टिविटी, तकनीकी प्रशिक्षण तथा आर्थिक संसाधनों की सीमाएँ डिजिटल समावेशन की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।

राव और नायक (2022) ने पंचायत स्तर पर जनजातीय महिला नेतृत्व का अध्ययन करते हुए पाया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को प्रशासनिक प्रक्रियाओं में अधिक सक्रिय बनाया है। महिलाएँ ऑनलाइन बैठकों, ई-गवर्नेंस तथा सामाजिक अभियानों में भागीदारी कर रही हैं।

देवी (2023) ने यह प्रतिपादित किया कि डिजिटल शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय महिलाओं में आत्मविश्वास और सामाजिक जागरूकता का विकास हुआ है। अध्ययन में डिजिटल वित्तीय सेवाओं के उपयोग को आर्थिक सशक्तिकरण का आधार माना गया।

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति को परिवर्तित करने वाले प्रमुख कारक हैं। फिर भी इस विषय पर व्यापक सामाजिक विश्लेषण की आवश्यकता बनी हुई है, विशेषकर डिजिटल परिवर्तन और नेतृत्व विकास के अंतर्संबंधों को समझने के संदर्भ में।

4. अनुसंधान पद्धति

4.1 अनुसंधान की प्रकृति

वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पर आधारित है। अध्ययन में गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार की अनुसंधान पद्धतियों का उपयोग किया गया (चौधरी *et al.*, 2021)।

4.2 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन के लिए भारत के जनजातीय बहुल क्षेत्रों का चयन किया गया, जिनमें झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के कुछ चयनित जिले शामिल किए गए।

4.3 नमूना चयन

अध्ययन में 300 जनजातीय महिलाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति द्वारा किया गया। चयनित महिलाओं की आयु 18 से 50 वर्ष के मध्य थी (पाण्डेय, 2011)।

4.4 डेटा संग्रहण

प्राथमिक आँकड़ों के लिए साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली तथा समूह चर्चा का उपयोग किया गया। द्वितीयक आँकड़ों के लिए शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, पुस्तकों तथा डिजिटल स्रोतों का उपयोग किया गया।

4.5 डेटा विश्लेषण

संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, औसत तथा तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से किया गया। सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण गुणात्मक व्याख्या के आधार पर किया गया।

5. परिणाम एवं विश्लेषण

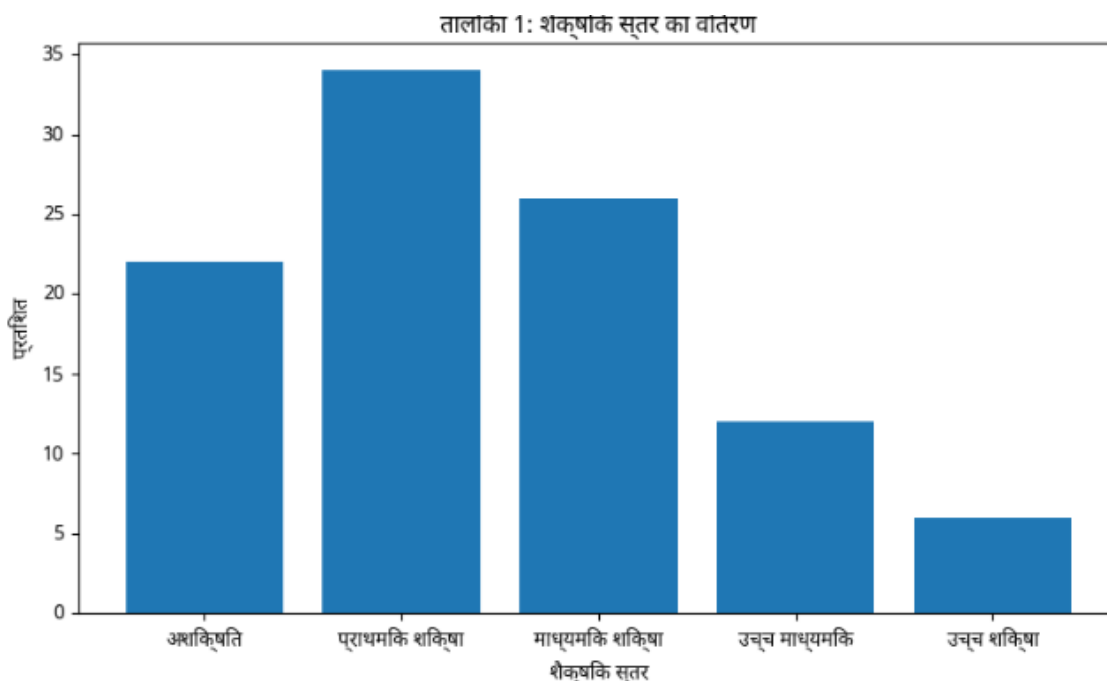
5.1 जनजातीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति

अध्ययन में पाया गया कि चयनित महिलाओं में शिक्षा का स्तर धीरे-धीरे बढ़ रहा है। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं की संख्या अधिक थी, जबकि उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम पाया गया (सिंह एवं राजलक्ष्मी, 1993)।

तालिका 1: शैक्षिक स्तर का वितरण

शैक्षिक स्तर	प्रतिशत
अशिक्षित	22%
प्राथमिक शिक्षा	34%
माध्यमिक शिक्षा	26%
उच्च माध्यमिक	12%
उच्च शिक्षा	6%

उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई है, परंतु उच्च शिक्षा तक पहुँच अभी सीमित है।



तालिका 1: शैक्षिक स्तर का वितरण

5.2 डिजिटल संसाधनों तक पहुँच

अध्ययन के दौरान यह तथ्य सामने आया कि जनजातीय महिलाओं के जीवन में डिजिटल संसाधनों की उपस्थिति पहले की तुलना में अधिक व्यापक हुई है। मोबाइल फोन, स्मार्टफोन, इंटरनेट सेवाएँ तथा डिजिटल संचार के अन्य माध्यम धीरे-धीरे जनजातीय समुदायों तक पहुँच रहे हैं। इन संसाधनों ने महिलाओं के दैनिक जीवन, सामाजिक संबंधों, आर्थिक गतिविधियों तथा शैक्षिक अवसरों को प्रभावित किया है। यद्यपि डिजिटल तकनीक का प्रसार बढ़ा है, फिर भी इसके उपयोग की नियमितता, गुणवत्ता तथा उपलब्धता में स्पष्ट असमानता दिखाई देती है (जाक्सा, 2004)। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश महिलाओं के पास मोबाइल फोन उपलब्ध थे, किंतु इंटरनेट उपयोग की नियमितता, तकनीकी समझ तथा डिजिटल सेवाओं तक पहुँच में पर्याप्त अंतर मौजूद था।

जनजातीय क्षेत्रों में मोबाइल फोन डिजिटल संपर्क का सबसे प्रमुख माध्यम बनकर उभरा है। अनेक महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि मोबाइल फोन ने संचार प्रक्रिया को सरल और त्वरित बनाया है। पहले जहाँ जानकारी प्राप्त करने के लिए स्थानीय प्रशासनिक कार्यालयों या अन्य व्यक्तियों पर निर्भर रहना पड़ता था, वहीं अब महिलाएँ मोबाइल के माध्यम से विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त कर रही हैं। परिवार के सदस्यों से संपर्क बनाए रखने, रोजगार संबंधी जानकारी प्राप्त करने, बच्चों की शिक्षा से जुड़ी सूचनाएँ जानने तथा स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी हासिल करने में मोबाइल फोन की महत्वपूर्ण भूमिका सामने आई है।

स्मार्टफोन के उपयोग ने डिजिटल संसाधनों की पहुँच को और अधिक विस्तृत किया है। अध्ययन में यह पाया गया कि जिन महिलाओं के पास स्मार्टफोन उपलब्ध थे, वे इंटरनेट आधारित सेवाओं का अधिक उपयोग कर रही थीं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, वीडियो सामग्री, ऑनलाइन बैंकिंग तथा सरकारी मोबाइल एप्लीकेशन का उपयोग उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। स्मार्टफोन के माध्यम से महिलाएँ डिजिटल भुगतान, आधार आधारित सेवाएँ तथा ऑनलाइन दस्तावेज़ीकरण की प्रक्रियाओं से जुड़ रही हैं। इससे प्रशासनिक कार्यों में सुविधा बढ़ी है तथा समय और आर्थिक संसाधनों की बचत भी हुई है।

इंटरनेट सुविधा की उपलब्धता जनजातीय महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक जीवन में परिवर्तन का महत्वपूर्ण आधार बनी है। इंटरनेट ने महिलाओं को स्थानीय सीमाओं से बाहर व्यापक सामाजिक संसार से जोड़ा है। महिलाएँ अब शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार तथा सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी ऑनलाइन प्राप्त कर रही हैं। अध्ययन में यह भी सामने आया कि इंटरनेट के माध्यम से महिलाएँ ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कौशल विकास गतिविधियों में भागीदारी कर रही हैं। इससे उनके ज्ञान और तकनीकी समझ का विस्तार हुआ है (बिस्वास एवं पाण्डेय, 1996)।

हालाँकि इंटरनेट उपयोग की नियमितता में स्पष्ट अंतर पाया गया। कुछ महिलाएँ प्रतिदिन इंटरनेट का उपयोग करती थीं, जबकि अनेक महिलाएँ केवल आवश्यकता पड़ने पर ही इसका उपयोग कर रही थीं। इस असमानता के पीछे कई कारण सामने आए, जिनमें इंटरनेट नेटवर्क की समस्या, आर्थिक सीमाएँ, तकनीकी ज्ञान का अभाव तथा डिजिटल उपकरणों की कमी प्रमुख थे। दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में नेटवर्क कनेक्टिविटी की समस्या अधिक गंभीर पाई गई। कई गाँवों में

इंटरनेट सेवाएँ सीमित थीं या उनकी गति अत्यंत धीमी थी, जिसके कारण डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग संभव नहीं हो पा रहा था।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता केवल तकनीकी सुविधा का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक संरचना से भी जुड़ा हुआ है। जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति बेहतर थी, वहाँ महिलाओं के पास स्मार्टफोन और इंटरनेट सेवाओं की उपलब्धता अधिक थी। इसके विपरीत आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में डिजिटल संसाधनों तक पहुँच सीमित पाई गई। अनेक महिलाओं ने यह बताया कि परिवार में केवल एक मोबाइल फोन उपलब्ध होने के कारण उन्हें सीमित समय के लिए ही उसका उपयोग करने का अवसर मिलता है। इससे डिजिटल साक्षरता के विकास में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

शैक्षिक स्तर भी डिजिटल संसाधनों की पहुँच को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक पाया गया। शिक्षित महिलाएँ मोबाइल एप्लीकेशन, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तथा इंटरनेट सेवाओं का अधिक प्रभावी उपयोग कर रही थीं। वे डिजिटल माध्यमों से सूचनाएँ प्राप्त करने, ऑनलाइन आवेदन भरने तथा डिजिटल बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने में अधिक सक्षम थीं। दूसरी ओर अशिक्षित या कम शिक्षित महिलाओं को तकनीकी प्रक्रियाओं को समझने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था (चटर्जी, 2014)। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल समावेशन के लिए शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण दोनों आवश्यक हैं।

डिजिटल बैंकिंग सेवाओं का उपयोग भी जनजातीय महिलाओं के जीवन में परिवर्तन का महत्वपूर्ण संकेतक बनकर सामने आया। अध्ययन में पाया गया कि अनेक महिलाएँ ऑनलाइन भुगतान, बैंकिंग एप्लीकेशन तथा आधार आधारित वित्तीय सेवाओं का उपयोग कर रही थीं। इससे वित्तीय लेनदेन की प्रक्रिया सरल हुई है तथा महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएँ डिजिटल भुगतान प्रणाली का उपयोग अधिक कर रही थीं। इससे बचत, ऋण वितरण तथा वित्तीय प्रबंधन की प्रक्रिया अधिक संगठित हुई है।

ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल शिक्षण संसाधनों की पहुँच ने भी महिलाओं और उनके परिवारों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। कोविड-19 महामारी के बाद डिजिटल शिक्षा का महत्व अधिक बढ़ा और जनजातीय क्षेत्रों में भी इसका प्रभाव दिखाई दिया। अनेक महिलाएँ अपने बच्चों की शिक्षा के लिए मोबाइल इंटरनेट का उपयोग कर रही थीं। कुछ महिलाएँ स्वयं भी ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा शैक्षिक वीडियो के माध्यम से नई जानकारी प्राप्त कर रही थीं। इससे शिक्षा के प्रति जागरूकता और तकनीकी समझ में वृद्धि हुई है।

डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता ने सामाजिक जागरूकता के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिलाएँ अब स्वास्थ्य, पोषण, महिला अधिकार, सरकारी योजनाओं तथा सामाजिक अभियानों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर रही हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों ने उन्हें अपने अनुभव साझा करने तथा अन्य समुदायों से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है। इससे सामाजिक सहभागिता और सामुदायिक चेतना का विकास हुआ है।

इसके बावजूद डिजिटल विभाजन की समस्या अभी भी विद्यमान है। अध्ययन में पाया गया कि आयु, शिक्षा, आय तथा भौगोलिक स्थिति के आधार पर डिजिटल संसाधनों तक पहुँच में असमानता मौजूद है। युवा महिलाएँ डिजिटल तकनीक का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक कर रही थीं, जबकि वृद्ध महिलाओं में तकनीकी उपयोग की प्रवृत्ति कम पाई गई (मंडल, 2021)। इसी प्रकार दूरस्थ और वन क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को डिजिटल सेवाओं तक पहुँचने में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था।

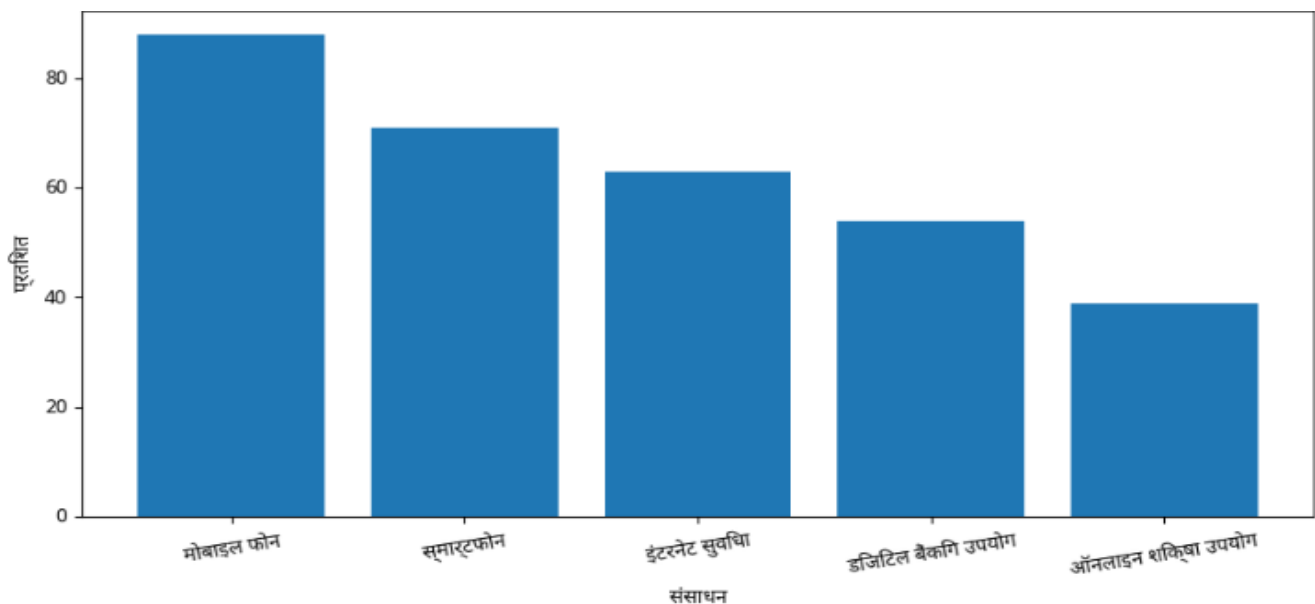
अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय महिलाओं तक डिजिटल संसाधनों की पहुँच सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है। मोबाइल फोन, स्मार्टफोन और इंटरनेट सेवाओं ने महिलाओं के जीवन में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। इन संसाधनों के माध्यम से महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक गतिविधियों तथा सामाजिक सहभागिता से अधिक प्रभावी रूप से जुड़ रही हैं। फिर भी डिजिटल समावेशन को व्यापक और प्रभावी बनाने के लिए तकनीकी अवसंरचना, डिजिटल प्रशिक्षण तथा आर्थिक सहायता की

आवश्यकता बनी हुई है। यदि जनजातीय क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधा, तकनीकी प्रशिक्षण और डिजिटल जागरूकता कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए, तो महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में और अधिक सकारात्मक परिवर्तन संभव हो सकते हैं।

तालिका 2: डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता

संसाधन	प्रतिशत
मोबाइल फोन	88%
स्मार्टफोन	71%
इंटरनेट सुविधा	63%
डिजिटल बैंकिंग उपयोग	54%
ऑनलाइन शिक्षा उपयोग	39%

यह आँकड़े संकेत करते हैं कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता बढ़ रही है, जिससे सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता बढ़ी है।



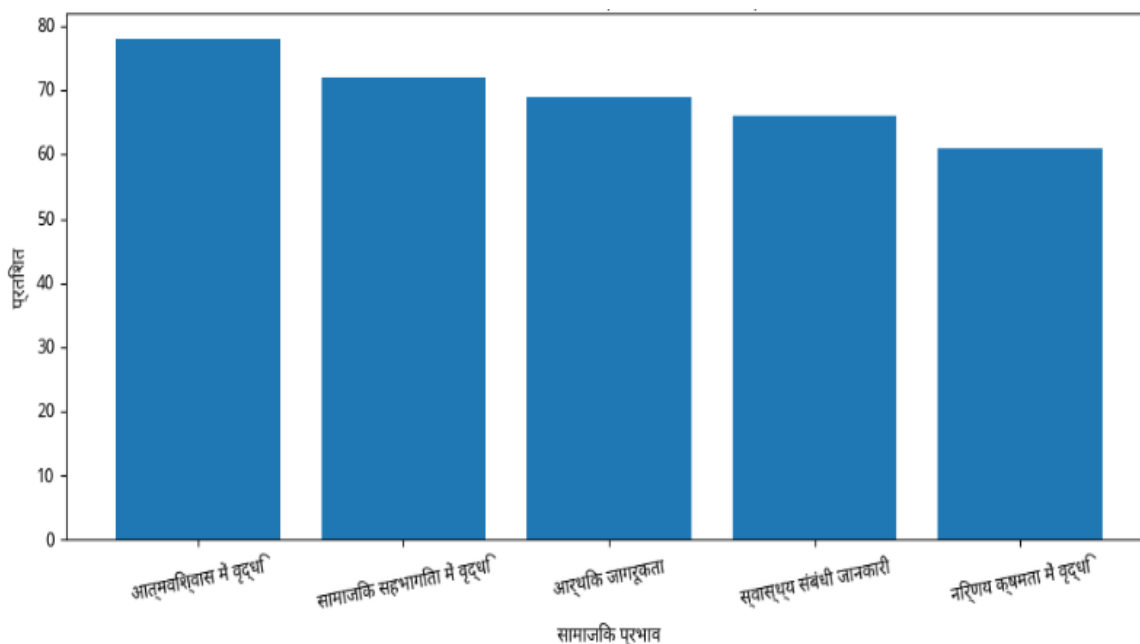
5.3 डिजिटल साक्षरता और सामाजिक परिवर्तन

डिजिटल साक्षरता के माध्यम से महिलाओं में सामाजिक जागरूकता और आत्मनिर्भरता का विकास हुआ। महिलाएँ सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य कार्यक्रमों तथा रोजगार संबंधी सूचनाओं तक पहुँच बना रही हैं।

तालिका 3: डिजिटल साक्षरता के सामाजिक प्रभाव

सामाजिक प्रभाव	प्रतिशत
आत्मविश्वास में वृद्धि	78%
सामाजिक सहभागिता में वृद्धि	72%
आर्थिक जागरूकता	69%
स्वास्थ्य संबंधी जानकारी	66%
निर्णय क्षमता में वृद्धि	61%

विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि डिजिटल साक्षरता सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान कर रही है।



तालिका 3: डिजिटल साक्षरता के सामाजिक प्रभाव

5.4 नेतृत्व विकास में डिजिटल माध्यमों की भूमिका

समकालीन समाज में डिजिटल तकनीक ने सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संरचनाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विस्तार ने महिलाओं के जीवन में नए अवसरों का निर्माण किया है, विशेषकर उन समुदायों में जहाँ पारंपरिक रूप से सामाजिक सहभागिता सीमित रही है। जनजातीय महिलाओं के संदर्भ में डिजिटल माध्यम नेतृत्व विकास का एक प्रभावशाली साधन बनकर उभरा है (गर्ग, 1960)। अध्ययन में यह तथ्य सामने आया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को सामाजिक और सामुदायिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान किया है। पंचायतों, स्वयं सहायता समूहों, महिला संगठनों तथा सामाजिक अभियानों में उनकी सहभागिता पहले की तुलना में अधिक सशक्त रूप में दिखाई देने लगी है।

नेतृत्व किसी भी समाज के विकास और परिवर्तन की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण आधार होता है। जनजातीय समाज में महिलाओं की भूमिका परंपरागत रूप से परिवार और सामुदायिक जीवन तक सीमित रही, किंतु डिजिटल युग ने इस स्थिति में परिवर्तन की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। मोबाइल फोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया तथा डिजिटल संचार के अन्य साधनों ने महिलाओं को व्यापक सामाजिक मंच उपलब्ध कराए हैं। इसके माध्यम से महिलाएँ अब केवल सूचना प्राप्त करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अपने विचारों, अनुभवों तथा समस्याओं को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करने में भी सक्षम हुई हैं।

अध्ययन में यह पाया गया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं के आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता को सुदृढ़ किया है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन समूहों के माध्यम से महिलाएँ विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा कर रही हैं तथा सामुदायिक समस्याओं के समाधान के लिए संगठित प्रयास कर रही हैं। डिजिटल संचार ने महिलाओं के बीच

संवाद और सहयोग की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया है। इससे सामूहिक नेतृत्व की भावना का विकास हुआ है, जो सामुदायिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पंचायती राज संस्थाओं में डिजिटल माध्यमों की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। अध्ययन में यह सामने आया कि पंचायत स्तर पर कार्य करने वाली अनेक महिलाएँ मोबाइल इंटरनेट और डिजिटल एप्लीकेशन का उपयोग प्रशासनिक कार्यों, योजनाओं की जानकारी तथा सरकारी प्रक्रियाओं के संचालन में कर रही हैं। ई-गवर्नेंस की प्रक्रिया ने महिलाओं को प्रशासनिक गतिविधियों से अधिक प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा है। पंचायत बैठकों की सूचना, सरकारी योजनाओं की जानकारी तथा विकास कार्यक्रमों की निगरानी डिजिटल माध्यमों से अधिक सुगम हुई है (महापात्र, 2017)। इससे महिलाओं की प्रशासनिक भागीदारी में वृद्धि हुई है तथा स्थानीय शासन में उनकी भूमिका अधिक प्रभावशाली बनी है।

स्वयं सहायता समूहों में डिजिटल तकनीक का उपयोग महिलाओं के नेतृत्व विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष बनकर सामने आया। अध्ययन में पाया गया कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएँ डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन भुगतान तथा सोशल मीडिया नेटवर्क का उपयोग कर रही हैं। इससे समूह संचालन, वित्तीय प्रबंधन तथा आपसी समन्वय की प्रक्रिया अधिक संगठित हुई है। डिजिटल माध्यमों ने महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने के साथ-साथ नेतृत्व कौशल विकसित करने का अवसर भी प्रदान किया है। समूह की महिलाएँ अब ऑनलाइन बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा विपणन गतिविधियों में भागीदारी कर रही हैं, जिससे उनकी सामाजिक पहचान और प्रभाव में वृद्धि हुई है।

डिजिटल माध्यमों ने जनजातीय महिलाओं को सामाजिक संगठनों और गैर-सरकारी संस्थाओं से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले जहाँ दूरस्थ क्षेत्रों की महिलाएँ बाहरी संगठनों से संपर्क

स्थापित करने में कठिनाई अनुभव करती थीं, वहीं अब इंटरनेट और मोबाइल संचार ने इस दूरी को कम किया है। महिलाएँ ऑनलाइन अभियानों, सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों तथा प्रशिक्षण कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने नेतृत्व कौशल को विकसित कर रही हैं। इससे सामाजिक मुद्दों के प्रति उनकी समझ और सक्रियता दोनों में वृद्धि हुई है।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व को भी प्रभावित किया है। कई जनजातीय क्षेत्रों में महिलाएँ स्थानीय चुनावों, सामाजिक आंदोलनों तथा सामुदायिक अभियानों में सक्रिय भागीदारी कर रही हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल प्रचार माध्यमों ने महिलाओं को अपने विचारों को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया है। इससे राजनीतिक जागरूकता तथा लोकतांत्रिक सहभागिता में वृद्धि हुई है। महिलाएँ अब केवल मतदाता की भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे नीति निर्माण तथा स्थानीय विकास प्रक्रियाओं में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

डिजिटल नेतृत्व के विकास में शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण पाई गई। अध्ययन में यह देखा गया कि शिक्षित महिलाएँ डिजिटल संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग कर रही थीं तथा नेतृत्व गतिविधियों में उनकी भागीदारी अधिक थी। डिजिटल प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं में प्रशासनिक प्रक्रियाओं, ऑनलाइन दस्तावेज़ीकरण तथा सामाजिक नेटवर्किंग की बेहतर समझ पाई गई। इसके विपरीत तकनीकी ज्ञान की कमी अनेक महिलाओं के लिए बाधा का कारण बनी हुई थी। इससे स्पष्ट होता है कि नेतृत्व विकास के लिए डिजिटल साक्षरता का विस्तार आवश्यक है।

सामाजिक दृष्टि से डिजिटल माध्यमों ने महिलाओं की सामाजिक पहचान को सुदृढ़ किया है। महिलाएँ अब अपने समुदाय की समस्याओं को प्रशासन और समाज के समक्ष अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर रही हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा, जल संरक्षण, महिला अधिकार तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर महिलाएँ डिजिटल अभियानों के माध्यम से जागरूकता फैला रही हैं। इससे समुदाय में महिलाओं की सामाजिक स्वीकार्यता और सम्मान में वृद्धि हुई है (मैन, 1996)।

हालाँकि अध्ययन में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आईं। अनेक महिलाओं ने इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या, तकनीकी संसाधनों की कमी तथा डिजिटल प्रशिक्षण के अभाव को नेतृत्व विकास में बाधा बताया। दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना की सीमाएँ महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ क्षेत्रों में सामाजिक और पारिवारिक प्रतिबंध भी महिलाओं की डिजिटल सहभागिता को सीमित करते हैं। तकनीकी उपकरणों की कमी तथा आर्थिक संसाधनों का अभाव भी डिजिटल नेतृत्व के विकास में बाधक तत्व के रूप में सामने आया।

इसके बावजूद अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि डिजिटल माध्यम जनजातीय महिलाओं के नेतृत्व विकास के लिए एक प्रभावशाली साधन सिद्ध हो रहे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को सूचना, संवाद और संगठन के नए अवसर प्रदान किए हैं। इसके माध्यम से महिलाएँ स्थानीय शासन, सामाजिक संगठनों तथा आर्थिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। डिजिटल नेतृत्व

ने महिलाओं के आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक प्रभाव को सुदृढ़ किया है।

अध्ययन यह संकेत करता है कि यदि जनजातीय क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना, तकनीकी प्रशिक्षण तथा महिला केंद्रित डिजिटल कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए, तो नेतृत्व विकास की प्रक्रिया और अधिक प्रभावी हो सकती है। डिजिटल समावेशन केवल तकनीकी विकास का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता तथा सामुदायिक सशक्तिकरण से भी जुड़ा हुआ है। इस प्रकार डिजिटल माध्यम जनजातीय महिलाओं के नेतृत्व विकास को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति दे रहे हैं।

तालिका 4: नेतृत्व गतिविधियों में भागीदारी

क्रमांक	नेतृत्व गतिविधि	प्रतिशत
1	स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी	74%
2	पंचायत गतिविधियों में सहभागिता	52%
3	डिजिटल अभियानों में भागीदारी	47%
4	सामुदायिक निर्णय प्रक्रिया	58%
5	सामाजिक संगठनों से जुड़ाव	49%

यह आँकड़े दर्शाते हैं कि डिजिटल माध्यमों ने नेतृत्व विकास को सुदृढ़ किया है।

5.5 डिजिटल चुनौतियाँ

डिजिटल युग ने समाज के विभिन्न वर्गों को विकास की नई संभावनाओं से जोड़ा है, किंतु इस परिवर्तन की प्रक्रिया में अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। जनजातीय महिलाओं के संदर्भ में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग ने सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन की दिशा में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न किए हैं, फिर भी डिजिटल समावेशन की प्रक्रिया अनेक बाधाओं से प्रभावित हो रही है। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि इंटरनेट सुविधा की कमी, तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव, आर्थिक सीमाएँ तथा सामाजिक परिस्थितियाँ डिजिटल विकास की प्रमुख चुनौतियाँ हैं (जर्बिन *et al.*, 2021)। इन समस्याओं के कारण जनजातीय महिलाएँ डिजिटल संसाधनों का पूर्ण और प्रभावी उपयोग नहीं कर पा रही हैं।

अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या जनजातीय क्षेत्रों में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। अनेक दूरस्थ और वन क्षेत्रों में नेटवर्क सुविधा अत्यंत सीमित थी। कई गाँवों में इंटरनेट की गति धीमी पाई गई, जबकि कुछ क्षेत्रों में नियमित नेटवर्क उपलब्ध ही नहीं था। इसके कारण महिलाएँ ऑनलाइन सेवाओं, डिजिटल शिक्षा, ई-गवर्नेंस तथा डिजिटल बैंकिंग जैसी सुविधाओं का निरंतर उपयोग नहीं कर पा रही थीं। इंटरनेट की अनियमित उपलब्धता के कारण डिजिटल संसाधनों के प्रति महिलाओं का विश्वास भी प्रभावित होता है। जब ऑनलाइन सेवाएँ समय पर कार्य नहीं करती, तब महिलाएँ पुनः पारंपरिक प्रक्रियाओं पर निर्भर हो जाती हैं।

तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव भी एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आया। अध्ययन में पाया गया कि अनेक महिलाएँ मोबाइल फोन का सामान्य उपयोग तो कर रही थीं, किंतु डिजिटल एप्लीकेशन, ऑनलाइन भुगतान प्रणाली, सरकारी पोर्टल तथा अन्य तकनीकी

सेवाओं के उपयोग में कठिनाइयों का सामना कर रही थीं। तकनीकी शब्दावली की जटिलता, अंग्रेज़ी भाषा की सीमित समझ तथा डिजिटल प्रक्रियाओं के प्रति अपरिचय के कारण महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी दिखाई दी। कई महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि उन्हें डिजिटल उपकरणों के उपयोग में सहायता के लिए परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। इससे डिजिटल आत्मनिर्भरता का विकास सीमित हो जाता है।

शिक्षा का निम्न स्तर भी डिजिटल चुनौतियों से गहराई से जुड़ा हुआ पाया गया। अशिक्षित और कम शिक्षित महिलाओं के लिए इंटरनेट आधारित सेवाओं का उपयोग अपेक्षाकृत कठिन था। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध अधिकांश सूचनाएँ लिखित रूप में होती हैं, जिन्हें समझने के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता आवश्यक होती है (भट्टाचार्य एवं मुर्मू, 2019)। अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षित महिलाएँ डिजिटल सेवाओं का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से कर रही थीं, जबकि अशिक्षित महिलाओं को तकनीकी प्रक्रियाओं को समझने में अधिक समय और सहायता की आवश्यकता पड़ रही थी। इससे डिजिटल असमानता की स्थिति और अधिक स्पष्ट होती है।

आर्थिक सीमाएँ भी डिजिटल समावेशन की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक थीं। अनेक जनजातीय परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण स्मार्टफोन, कंप्यूटर तथा इंटरनेट रिचार्ज जैसी सुविधाओं पर नियमित खर्च करना संभव नहीं था। कई परिवारों में केवल एक मोबाइल फोन उपलब्ध था, जिसका उपयोग पूरे परिवार द्वारा किया जाता था। ऐसी स्थिति में महिलाओं को सीमित समय के लिए ही डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्राप्त होती थी। अध्ययन में यह भी पाया गया कि कई महिलाएँ डेटा पैक और इंटरनेट सेवाओं की लागत के कारण ऑनलाइन गतिविधियों में निरंतर भागीदारी नहीं कर पाती थीं (धनश्री *et al.*, 2014)।

डिजिटल उपकरणों की कमी भी एक गंभीर समस्या के रूप में सामने आई। दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में कंप्यूटर केंद्र, डिजिटल प्रशिक्षण संस्थान तथा सार्वजनिक इंटरनेट सुविधाएँ पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं थीं। स्कूलों और सामुदायिक केंद्रों में भी डिजिटल अवसंरचना सीमित पाई गई। इसके कारण महिलाओं को तकनीकी अभ्यास और प्रशिक्षण के अवसर कम प्राप्त हो रहे थे। जिन क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता बेहतर थी, वहाँ महिलाओं में डिजिटल जागरूकता और सहभागिता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

भाषाई समस्या भी डिजिटल उपयोग में एक बाधा के रूप में सामने आई। अधिकांश डिजिटल प्लेटफॉर्म और एप्लीकेशन अंग्रेज़ी या शहरी हिंदी भाषा पर आधारित होते हैं, जबकि जनजातीय महिलाएँ स्थानीय भाषाओं और बोलियों का अधिक उपयोग करती हैं। भाषा की यह दूरी डिजिटल संसाधनों की उपयोगिता को सीमित करती है (देवान, 2010)। अनेक महिलाओं ने यह बताया कि वे मोबाइल एप्लीकेशन और ऑनलाइन निर्देशों को पूरी तरह समझ नहीं पातीं, जिसके कारण डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने में संकोच अनुभव करती हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक कारक भी डिजिटल चुनौतियों को प्रभावित करते हैं। कुछ जनजातीय समुदायों में महिलाओं की सार्वजनिक सहभागिता और तकनीकी उपयोग को लेकर पारंपरिक दृष्टिकोण अभी भी विद्यमान हैं। परिवार और समाज के कुछ वर्ग

महिलाओं के मोबाइल उपयोग और इंटरनेट गतिविधियों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। इससे महिलाओं की डिजिटल स्वतंत्रता प्रभावित होती है। अध्ययन में यह पाया गया कि जिन परिवारों में महिलाओं को निर्णय लेने की स्वतंत्रता अधिक थी, वहाँ डिजिटल संसाधनों का उपयोग भी अधिक प्रभावी था।

साइबर सुरक्षा और डिजिटल धोखाधड़ी की समस्या भी महिलाओं के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। अनेक महिलाएँ ऑनलाइन लेनदेन और सोशल मीडिया के उपयोग के दौरान सुरक्षा संबंधी जोखिमों से पूरी तरह परिचित नहीं थीं। डिजिटल धोखाधड़ी, फर्जी कॉल, ऑनलाइन ठगी तथा व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग जैसी घटनाओं का भय महिलाओं के डिजिटल उपयोग को प्रभावित करता है (जेहोल, 2010)। साइबर सुरक्षा संबंधी जागरूकता की कमी के कारण कई महिलाएँ डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने में संकोच करती हैं।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि सरकारी योजनाओं और डिजिटल कार्यक्रमों की जानकारी का अभाव महिलाओं की सहभागिता को सीमित करता है। अनेक महिलाओं को यह जानकारी नहीं थी कि सरकार द्वारा डिजिटल साक्षरता और तकनीकी प्रशिक्षण से संबंधित कौन-कौन सी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। सूचना के अभाव में वे उपलब्ध अवसरों का लाभ नहीं उठा पा रही थीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि केवल डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके प्रति जागरूकता और मार्गदर्शन भी आवश्यक है।

डिजिटल चुनौतियों के बावजूद अध्ययन में यह संकेत मिला कि महिलाओं में तकनीकी सीखने की उत्सुकता और सकारात्मक दृष्टिकोण मौजूद है। अनेक महिलाओं ने यह व्यक्त किया कि यदि उन्हें उचित प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, तो वे डिजिटल सेवाओं का अधिक प्रभावी उपयोग कर सकती हैं। युवा महिलाओं और छात्राओं में डिजिटल तकनीक के प्रति अधिक रुचि देखी गई, जो भविष्य में डिजिटल समावेशन की संभावनाओं को सुदृढ़ करती है।

अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय महिलाओं के डिजिटल सशक्तिकरण के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता है (मित्रा, 2008)। इंटरनेट अवसंरचना का विकास, तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार, स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री की उपलब्धता तथा आर्थिक सहायता योजनाएँ डिजिटल चुनौतियों को कम करने में सहायक हो सकती हैं। इसके साथ ही साइबर सुरक्षा जागरूकता और महिला केंद्रित डिजिटल शिक्षा कार्यक्रमों को भी प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

इस प्रकार डिजिटल चुनौतियाँ केवल तकनीकी सीमाएँ नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं। यदि इन चुनौतियों का समुचित समाधान किया जाए, तो डिजिटल तकनीक जनजातीय महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकती है।

तालिका 5: डिजिटल साक्षरता में प्रमुख बाधाएँ

बाधाएँ	प्रतिशत
इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या	68%
तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव	64%
आर्थिक संसाधनों की कमी	57%

डिजिटल उपकरणों की कमी	49%
सामाजिक प्रतिबंध	41%

इन चुनौतियों के कारण डिजिटल समावेशन की प्रक्रिया प्रभावित होती है।

6. चर्चा

अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि डिजिटल साक्षरता जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति को परिवर्तित करने वाला महत्वपूर्ण कारक बन चुकी है। सूचना प्रौद्योगिकी ने शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय समावेशन तथा सामाजिक सहभागिता के क्षेत्र में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से महिलाएँ सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर रही हैं तथा आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी कर रही हैं (बसु, 1993)।

सामाजिक दृष्टि से डिजिटल साक्षरता ने महिलाओं में आत्मविश्वास तथा निर्णय क्षमता का विकास किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से महिलाएँ व्यापक सामाजिक नेटवर्क से जुड़ रही हैं। इससे उनके विचारों, अनुभवों तथा ज्ञान का विस्तार हुआ है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि डिजिटल बैंकिंग और ऑनलाइन भुगतान प्रणाली ने वित्तीय स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया है।

नेतृत्व विकास के संदर्भ में डिजिटल माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। पंचायतों और स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं की सक्रियता सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सकारात्मक संकेत प्रस्तुत करती है (जोशी, 2013)। डिजिटल संचार ने महिलाओं को सामुदायिक मुद्दों पर अपनी आवाज़ उठाने का अवसर प्रदान किया है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता तथा सामुदायिक विकास की प्रक्रियाएँ सुदृढ़ हुई हैं।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता एक गंभीर चुनौती है। ग्रामीण और दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी तथा तकनीकी अवसंरचना की कमी महिलाओं की प्रगति को सीमित करती है (मल एवं सैकिया, 2024)। तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अभाव भी डिजिटल साक्षरता के विस्तार में बाधा उत्पन्न करता है। इसलिए सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा व्यापक डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन आवश्यक है।

डिजिटल साक्षरता के माध्यम से महिलाओं में सामाजिक चेतना का विकास हुआ है। महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हुई हैं। इस प्रकार डिजिटल परिवर्तन केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का आधार बन चुका है।

7. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति के नवीन आयामों को निर्धारित करने वाले प्रमुख कारक हैं। डिजिटल तकनीक ने महिलाओं को शिक्षा, सूचना, आर्थिक संसाधनों तथा सामाजिक अवसरों तक पहुँच प्रदान की है। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं में आत्मनिर्भरता, सामाजिक जागरूकता तथा नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ है।

अध्ययन में पाया गया कि मोबाइल इंटरनेट, डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन शिक्षा तथा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने जनजातीय महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। महिलाएँ स्थानीय शासन, स्वयं सहायता समूहों तथा सामुदायिक संगठनों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इससे सामाजिक समानता और सामुदायिक विकास की प्रक्रियाएँ सुदृढ़ हुई हैं।

यद्यपि डिजिटल परिवर्तन ने अनेक अवसर प्रदान किए हैं, फिर भी तकनीकी अवसंरचना, इंटरनेट कनेक्टिविटी तथा प्रशिक्षण की कमी जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए व्यापक डिजिटल शिक्षा कार्यक्रम, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता तथा महिला केंद्रित विकास नीतियों की आवश्यकता है।

जनजातीय महिलाओं का डिजिटल सशक्तिकरण सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। डिजिटल साक्षरता और नेतृत्व के माध्यम से महिलाएँ सामाजिक विकास, आर्थिक प्रगति तथा लोकतांत्रिक सहभागिता में सक्रिय भूमिका निभा सकती हैं। इस प्रकार डिजिटल समावेशन जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को सुदृढ़ करने और समावेशी विकास सुनिश्चित करने का प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ

1. अम्बष्ट NK. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति: शैक्षिक निहितार्थ। *सोशल चेंज*. 1993;23(4):60-65।
2. मंजूनाथा BR, गंगाधर MR. कर्नाटक के चामराजनगर जिले में बेट्टाकुरुबा जनजातीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति: एक अध्ययन। *एंट्रोकोम: ऑनलाइन जर्नल ऑफ एंथ्रोपोलॉजी*. 2018;14(1)।
3. मन्ना S, सरकार R. जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति: पश्चिम मिदनापुर, पश्चिम बंगाल की तीन जनजातीय समुदायों का अध्ययन। *समकालीन भारत में लैंगिक असमानता*. 2016:226-234।
4. चौधरी A, राउल SK, मेटे JK. भारत में जनजातीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में सशक्तिकरण। *जर्नल ऑफ लीगल एथिकल एंड रेगुलेटरी इश्यूज*. 2021;24:1।
5. पाण्डेय K. हिमाचल प्रदेश के भरमौर क्षेत्र की गद्दी जनसंख्या की जनजातीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एंड एंथ्रोपोलॉजी*. 2011;3(6):189।
6. सिंह AK, राजलक्ष्मी C. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति। *सोशल चेंज*. 1993;23(4):3-18।
7. जाक्सा V. भारत में जनजातियों के अध्ययन में महिलाएँ और लैंगिकता। *इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज़*. 2004;11(3):345-367।
8. बिस्वास UN, पाण्डेय J. जनजातीय और जातीय समूहों में गतिशीलता तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति की धारणा। *जर्नल ऑफ क्रॉस-कल्चरल साइकोलॉजी*. 1996;27(2):200-215।
9. चटर्जी P. भारत में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति: चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज़*. 2014;2(2):55-60।

10. मंडल MA. जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति। *विमेन एम्पावरमेंट: अंडरस्टैंड योर वैल्यूज़ एंड हैव अ लीप टू अचीव मोर*. पृ.76।
11. गर्ग BM. भारत के जनजातीय समुदायों में महिलाओं की स्थिति। *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क*. 1960;21(2):195।
12. महापात्र A. समकालीन ओडिशा के जनजातीय समुदायों में महिलाओं का आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण। *इंटरनेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च जर्नल*. 2017;3(5):191-193।
13. मैन K. *जनजातीय महिलाएँ: इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर*. नई दिल्ली: एमडी पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड; 1996।
14. जर्बिन S, आलम A, जवाद M. जनजातीय महिलाओं की स्थिति पर सामाजिक कारकों का प्रभाव: मोहम्मद एजेसी का एक अध्ययन। *जर्नल ऑफ डेवलपमेंट एंड सोशल साइंसेज़*. 2021;2(4):440-455।
15. धनश्री K, विजयाभिनंदना B, प्रदीपकुमार PB. आंध्र प्रदेश के उच्च ऊँचाई और जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च इन साइंस, इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी*. 2014;3(2):9360-9368।
16. मित्रा A. भारत की अनुसूचित जनजातियों में महिलाओं की स्थिति। *द जर्नल ऑफ सोशियो-इकोनॉमिक्स*. 2008;37(3):1202-1217।
17. बसु SK. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति। *सोशल चेंज*. 1993;23(4):19-39।
18. मल P, सैकिया N. जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण: भारत के मातृसत्तात्मक और पितृसत्तात्मक समाजों का तुलनात्मक विश्लेषण। *कॉर्गेट सोशल साइंसेज़*. 2024;10(1):2360172।
19. जोशी DK. जनजातीय महिला सशक्तिकरण: इक्कीसवीं सदी की चुनौती। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंसेज़*. 2013;3(3):108।
20. मजूमदार K, राउल M, चटर्जी D. जनजातीय वृद्धों की सामाजिक स्थिति और व्यक्तिपरक कल्याण: एक कथात्मक विमर्श। In: *सोशल वेलफेयर इन इंडिया एंड चाइना: अ कम्परेटिव पर्सपेक्टिव*. सिंगापुर: सिंगर; 2020. p.191-209।
21. दास M. असम की जनजातीय महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन और विकास का प्रतिरूप। *क्लेरियन: इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी जर्नल*. 2013;2(1)।
22. जेहोल LV. *जनजातीय महिलाओं की स्थिति*. 2010।
23. देवान R. महिलाओं की स्थिति: जनजातीय महिला सशक्तिकरण पर एक अनुभवजन्य अध्ययन। *सोशल माॅडर्निटी*. 2010:22।
24. भट्टाचार्य S, मुर्मू SC. जनजातीय समाज में महिलाएँ: परिवार में बहुआयामी भूमिकाओं का संतुलन। *जर्नल ऑफ कल्चरल एंड सोशल एंथ्रोपोलॉजी*. 2019;1(4):01-12।
25. महाजन LYP. *सामाजिक समावेशन: जनजातीय महिलाओं का एक अध्ययन*

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.